विचार बिन्दु

चतुराई दरबारियों के लिए गुण है, साधुओं के लिए दोष। –शेख सादी

राज्य के कुछ विश्वविद्यालयो में अन्य प्रदेश का कुलपति स्वीकार नहीं

राजस्थान प्रदेश के सरकारी विश्वविद्यालयों में प्रांतवाद लम्बे समय से फलता-फूलता रहा है। इसके साथ बहुधा जाति वाद भी पनपता रहा है मेवाड़ क्षेत्र इस संकीर्णता से सर्वाधिक ग्रसित है। विद्या मंदिरों में शिक्षा व अनुसन्धान के अतिरिक्त और सब कुछ होता है। अभी कुछ दिनों पूर्व सुखाडिया विश्वविद्यालय के एक पूर्व कुलपति प्रोफ. अमेरिका सिंह का विस्तृत विवरण अखबार में छपा, जिन्हें कुलपति के पद से हटा दिया था। ऐसा वाकया प्रदेश में कोई पहली बार नहीं हुआ, अपितु विश्व विद्यालय की स्थापना से ही किसी की बुरी नजर से कतिपय कुलपतिओं के साथ ऐसा हुआ है।

पहली बार मेरी नज़र में एक उत्तम विद्वान् डॉ. जी.एस. महाजनी कुलपति नियुक्त किये गए। जिनके कार्यकाल में एक अधिष्ठाता और एक अनुसन्धान निदेशक में ऐसे मतभेद उपजे कि उच्च पदों पर विराजमान अधिकांश अधिकारी भी दो दलों में साफ़ तौर पर बटे नज़र आये और उस झगड़े में निष्पक्ष रहते हुए भी कुलपति कभी एक और कभी दूसरे पक्ष की तरफ प्रतीत नज़र आये। कहते हैं कुलपति महाजनी सदैव ऑफिस आने जाने के लिए अपनी निजी कार का ही उपयोग करते थे, कभी सरकारी गाड़ी उपयोग में नहीं लेते, वेतन भी वे एक रूपया प्रति माह लेते थे ऐसा सुना जाता था। संभवत: वे कार्यकाल समाप्ति से कुछ पहले ही पद छोड़ अपने गृह प्रदेश महाराष्ट्र चले गए थे। मैं उस काल में जोबनेर स्थित महाविद्यालय में डेरी विभाग में विभागाध्यक्ष था। मुझे कभी-कभी ऐकडेमिक कार्य हेतु उदयपुर आना पडता था। अपनी प्रत्येक विजिट में मैं कुलपति से उनके ऑफिस में मिलने जरूर जाता। मेरी स्लिप मिलते ही वे मुझे अंदर बुला लेते। मेरे दरवाजे से अंदर होते ही वे अपनी कुर्सी से उठ खड़े होते और मुझे बैठने की कहकर फिर कुर्सी पर बैठते। उनके समक्ष मैं बहुत जूनियर था... पद, अनुभव और सभी भांति शिष्टाचार में भी।

मुश्किल से एक-दो मिनट से अधिक मेरे पास बात करने को कोई विषय नहीं होता यही कहता कि किसी कार्यवश आया था समय निकाल कर आपके दर्शनों और आशीर्वाद के लिए आया हूँ। वे पूछते– 'क्या मुझसे कोई काम है?' मैं कह देता, 'नहीं सर, कोई काम नहीं।' वापिस चलने के समय मैं हाथ जोड़ कर खड़ा होता तो वे भी अपनी कुर्सी से उठ खड़े होते। मैंने ऐसी शालीनता व विनम्रता अन्य किसी कुलपति में नहीं देखी। उनके जैसा व्यक्तित्व आज तो दुर्लभ है। एक बार आसलपुर जोनबेर रेलवे स्टेशन पर वे ट्रैन से उतरकर एक प्राइवेट फ़ज़ल बस में बैठ कॉलेज पहुंच गए, जहाँ कृषि मेला का आयोजन था। वहां पहुँच कर वे डीन से ऐसे मिले जैसे कुछ अन्यथा हुआ ही नहीं। वास्तव में उनके आगमन की पुष्टि समय से अधिकारिओं ने जोबनेर नहीं भेजी अन्यथा कॉलेज की कार उन्हें लेने स्टेशन पहुँच जाती। उनके कार्य काल में कुछ टीचर्स ने विश्वविद्यालय में व्याप्त तथाकथित नियम विरुद्ध कारगुजारिओं पर एक पीली बुलेटिन प्रकाशित की थी, जिससे वे काफी आहत हुए थे और व्यथित भी, क्योंकि वे किसी आरोप में संलग्न तो थे नही परन्तु उनकी प्रबंधकीय क्षमता पर कुठाराघात अवश्य हो गया। इस प्रकरण को इसलिए लिखा ताकि पाठकगण समझ सकें कि राजस्थान की उच्च शिक्षण संस्थाओं में केसा वातावरण निर्मित होता है।

डॉ. महाजनी के उपरांत डॉ. पृथ्वी सिंह लाम्बा कुलपति नियुक्त हुए। उन्हें हर कर्मचारी की अच्छी पहचान रहती, भले ही वे उससे कभी न मिले हों। कौन ड्यूटी के प्रति समर्पित है कौन नहीं? निकृष्ट और कामचोर उनसे सदैव बच कर रहते। मैंने देखा था उनकी गाड़ी जैसे ही स्टाफ कॉलोनी स्थित गेस्ट हाउस जोबनेर में घुसती, कुछ लोग घर में घुस जाते और कुछ छुट्टी की एप्लीकेशन देकर जयपुर चले जाते। प्रशासन की दृष्टि से डॉ. लम्बा विश्वविद्यालय के लिए सभी दृष्टि से सर्वश्रेष्ट थे। उन्हें भी सरकार ने समय से पहले हटा दिया था लेकिन सरकार से वे दबे नहीं, सचिवालय में ही सरकार से उन्होंने बाकी बची अवधि का पूरा वेतन, भत्ते आदि सब ले लिए तब उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। डॉ. लम्बा के जाने के बाद सरकार ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश की अगुवाई में एस.डी. सिंह जांच कमीशन गठित किया, जिसने अपनी बृहत जांच रिपोर्ट तीन भागों में छाप कर सरकार को सौंपी। लोगों के साथ किये गए अनेक पक्षपात के प्रकरण इस रिपोर्ट में निर्णय सहित समाहित हैं। लाखों रुपये इस कमीशन पर खर्च किये गये।

इसके बाद डॉ. राजनाथ सिंह कुलपति नियुक्त हुए। उन्हें भी शांति से काम नहीं करने दिया गया और एक छात्र नेता की कविताओं की पुस्तक को विमोचन करने के कारण बात का बतंगड़ बना उन्हें हटने को मजबूर कर दिया। उनके विरुद्ध भी सरकार को सुप्रीम कोर्ट में हारने की स्तिथि होने से एक प्रशासनिक अधिकारी श्री कुरूप को जांच करने और फिर बाद में उनसे सुलह करने के लिए सरकार ने लगा दिया। जांच के दौरान श्री कुरूप को डॉ. सिंह के विरुद्ध कोई भी आरोप अथवा न्याय विपरीत कुछ भी नहीं मिला बल्कि उनके शालीन सद-व्यवहार से श्री कुरूप बहुत प्रभावित हुए और उन्हें त्यागपत्र के लिए राजी कर लिया। सरकार ने उन्हें भी शेष अवधि का वेतन भत्ते देकर समय से पूर्व विदा कर दिया।

यूनिवर्सिटी में यूनिवर्सल अथवा विश्व स्तर का कुछ भी नहीं, फिर क्यों नहीं इनको राजकीय महाविद्यालय घोषित किया जाय ? ऐसा होने पर जातिगत पक्षपात भी होते रहेंगे तो भी कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। यदि विवेक और कौशल विकास पर फोकस हायर सेकेंडरी स्तर रहे तो आगे उच्च शिक्षा में पैदा कुंठा से कुछ राहत संभव है।

उपरोक्त जांच के बाद डॉ. के.एन. नाग कुलपति बने, जिनके विरुद्ध भी लोगों ने मोर्चा खोल दिया, लेकिन डॉ. नाग की सरकार में अच्छी पकड के कारण कोई उनका कुछ कर न सका। इसी बीच सरकार ने बीकानेर में प्रथम कृषि विश्ववद्यालय स्थापित कर दिया और डॉ. नाग को वहां कुलपति बनाकर बीकानेर शिफ्ट कर दिया। परन्तु वे वहां भी जांच से नहीं बच पाए उनकी जांच श्री मंगल बिहारी आयोग ने की। बाद में नियुक्त कुलपति डॉ. हरज्ञान सिंह को भी सरकार ने निलंबित कर दिया। फलस्वरूप वे मसले को सुप्रीम कोर्ट ले गए, सरकार ने उनकी जांच भी मंगल बिहारी आयोग को सौंप दी। जांच अधिकारी को डॉ. नाग के विरुद्ध तो कुछ प्रकरण सही मिले जिसकी रिपोर्ट सरकार को प्रेषित हुयी लेकिन डॉ सिंह के विरुद्ध एक भी प्रकरण सही नहीं पाया गया। जिसकी रिपोर्ट अंग्रेजी अखबार इंडियन एक्सप्रेस में फ्रंट पेज पर छपी। सुप्रीम कोर्ट जाते समय डॉ. सिंह को दिल का दौरा पडने से निधन हो गया, इसलिए वे अपने ऊपर लगे कल्पित आरोपों पर निर्णय नहीं देख सके। और इस प्रकार राजस्थान ने एक महत्वपूर्ण सश्य वैज्ञानिक खो दिया, जिसे काफी खोजबीन कर सर्च समिति की अनुसंशा पर नियुक्त किया था।

तत्पश्चात डॉ. पटेल बीकानेर में कुलपति नियुक्त हुए वे किसी प्रकार सरकार में अपने सम्बन्धो के कारण सफल रहे। बाद में एक-दो प्रसाशनिक अधिकारी कुलपति बने। फिर उनके बाद डॉ. खगेश्वर प्रधान जो उस समय हिसार में कार्यरत थे कुलपति बनाया गया। भुवनेश्वर ओडिसा के डॉ. प्रधान पशुपालन में जाने-माने पोषण विज्ञ थे। एक साल के उपरान्त उनके विरुद्ध भी कतिपय वैज्ञानिकों ने वित्तीय घोटालों की मनगढंत रिपोर्ट जांच एजेंसी को कर दी। उन्हें जब पता चला तो वे सीधे राजभवन जाकर कुलाधिपति से विस्तृत चर्चा कर अपना त्यागपत्र दे आये। लेकिन तब तक सरकारी जांच एजेंसी में उनके विरुद्ध मामला दर्ज हो चुका था।

सुखाडिया यूनिवर्सिटी के प्रोफ. अमेरिका सिंह पूर्व कुलपति का दृष्टांत बहुत मनोरंजक और ताजा है। प्रोफ. अमेरिका सिंह के तीन-चार डेवलपमेंट प्लान बड़े उच्च कोटि के थे जिन्हे वे आरम्भ करना चाहते थे उनमे एक उच्च विशेषता का अभियांत्रिकी महाविद्यालय स्थापित करने का भी था। मुझे नहीं पता किस कारण उन्हें कार्य नहीं करने दिया गया। परन्तु पार्शव में उनका राजस्थानी नहीं होना ही प्रमुख कारण बताया गया जो सही प्रतीत होता है।

काफी कुछ बातें उन्होंने अखवार में छपी रिपोर्ट में बता दी फिर भी अंतरंग कारण उनसे कोई पूंछे तो शायद सही कारणों का पता चल जाय। फिर भी मेरा आंकलन और सोच जो मैनें इस लेख के शीर्षक में दर्शाया है वही सत्य निकलेगा। लगभग इसी अवधि में उदयपुर की ही बी, एन प्राइवेट यूनिवर्सिटी में नियुक्त डॉ. एन.बी. सिंह को भी कार्य में बाधा डाल कर पद छोड़ने को मजबूर कर दिया। ऐसी संकुचित सोच की बस्ती जहाँ विद्या का अध्ययन होता हो छात्र को क्या हासिल होता होगा? कृषि में उच्च शिक्षा का प्रदेश में सर्वांगीण पतन के बारे में मैं अपने कई लेखों में लिख चुका हूँ। जब शिक्षण चौपट हो चुकी हो तब फिर अनुसन्धान की क्या विसात वह अछूता रह जाय।

ध्यान देने की बात है कि कुलपति का चयन सरकार द्वारा गठित एक सर्च समिति द्वारा सुझाये तीन नामी व्यक्तिओं के पैनल में से किया जाता है। इस सर्च समिति में एक सदस्य सरकार का, दूसरा विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल द्वारा नामित और तीसरा यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन अथवा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् से होता है। उक्त प्रकार से बने पैनल को कुलधिपति राज्य सरकार (चीफ मिनिस्टर) को उनकी अनुशंसा के लिए भेजते है। पैनल में कोई भी नाम सरकार के अनुकूल नहीं होने पर पेनल कुलाधिपति को नए नामों के लिए वापिस भेज दिया जाता है। सरकार पैनल में से एक नाम अनुमोदन कर कुलाधिपति को वांछित कुलपति के लिए आदेश जारी करने की नोटिंग के साथ वापिस भेज देती है।

इसलिए यह कहना भ्रान्ति है कि कुलपति नियुक्ति का निर्णय केवल कुलाधिपति का होता है। मुख्यमंत्री की अनुशंसा के बिना कुलाधिपति नियुक्ति नहीं करते। फिर भी किसी तुक्ष बात पर सरकार कुलपति से कुपित हो जाय तो सरकार उसे वांछित अवधि पूर्व हटाने पर तुल जाती है, और कुलपति को कई प्रकार की जांच और कोर्ट केस आदि में उलझना पड़ता है। ऐसे मामलों में दोषी अभी तक तो सरकार ही रही है और राज कोष से बिना वजह लाखों रूपए (जनता के टेक्स का) खर्च कर दिए गए फिर भी अभी तक किसी ने इस बाबत कभी कोई सवाल नहीं उठाया और न जबाव देहि फिक्स की मांग की गई। इसे डेमोक्रेसी की बहुत बड़ी कमजोरी कहें अथवा सरकारी स्तर पर धांधलेबाजी और नियमों का उलंघन और राज कोष का दुरूपयोग ?

संक्षेप में सत्तारूड पार्टी का मानसिक दिवालियापन और विपक्षी सदस्यों की विरोध नहीं जताने एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए चुप रहने की प्रवर्ति सरकारी दोष में प्रमुख पक्ष हैं।

इस लेख के आखिर में मैं अपनी सोच फिर दोहरा रहा हूँ कि यूनिवर्सिटी में यूनिवर्सल अथवा विश्व स्तर का कुछ भी नहीं, फिर क्यों नहीं इनको राजकीय महाविद्यालय घोषित किया जाय ? ऐसा होने पर जातिगत पक्षपात भी होते रहेंगे तो भी कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। यदि विवेक और कौशल विकास पर फोकस हायर सेकेंडरी स्तर रहे तो आगे उच्च शिक्षा में पैदा कुंठा से कुछ राहत संभव है।

लिखने को तो बहुत कुछ अभी बाकी है परन्तु पाठक उक्त विवरण से कैसा भ्रूण उच्च शिक्षा में पनप रहा है, सुगमता से विद्वान लोग आंक सकते हैं। प्रदेश का दुर्भाग्य कि उच्च शिक्षण संस्थान मल्टीप्ल रोगों से ग्रषित हैं जिसकी भरपाई उच्च शिक्षा को चुंगल चिड़िया के पंजों से मुक्त होने पर ही पैदा किये जख्म कुछ भर सकें और टेक्स देने वालों को न्याय मिल सके।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

सांभर में जमीन आवंटित होने के बाद भी मिनी स्टेडियम नहीं बन पा रहा है

सांभरझील, (निसं)। सांभर नगरपालिका के खाते में मिनी स्टेडियम के नाम से दर्ज आराजी खसरा नम्बर 58 रकबा 18 बीघा 18 बिस्वा भूमि पर वर्ष 2017 में सेंट्रल पार्क बनाए जाने के लिए विधायक के नाम का लगाया गया शिलान्यास पट्ट पांच साल से धूल फांक रहा है। इस विशाल भूभाग पर न तो मिनी स्टेडियम के सपने साकार हो सके और न ही सेंट्रल पार्क धरातल पर नजर आ रहा है। यह भूमि आज तक वीरान पड़ी है। राज्य सरकार की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न खेलों में रूचि रखने वाले खिलाड़ियों के लिए मिनी स्टेडियम बनाए जाने के लिए भूमि आरिक्षत तो कर दी लेकिन प्रदेश सरकार का खेल मंत्रालय अपनी ही इस योजना को साकार करने में कामयाब नहीं हो सका। गौरव पथ पर नवीन अदालत भवनों से पहले मुख्य मार्ग व देवयानी तीर्थ स्थल जाने वाले उप मार्ग पर स्थित इस भूमि की सुरक्षा व संरक्षा प्रदान करने के लिए इसका स्वामित्व नगरपालिका को इसलिए सौंप दिया गया था कि यहां पर अलग से खेल मंत्रालय से जुड़ा कोई विभाग नहीं है।

मिनी स्टेडियम की भूमि पर पृथ्वीराज चौहान सेंट्रल पार्क के नाम का शिलान्यास पट्ट धूल फांक रहा है

- इस विशाल भूभाग पर न तो मिनी स्टेडियम के सपने साकार हो सके और न ही सेंट्रल पार्क धरातल पर नजर आ रहा है
- शिलान्यास के बाद से इस भूमि की किसी ने सुध नहीं ली, वर्तमान में भूमि पर जंगली घास-फूंस व पेड़ पौधे उगे हुये हैं

तत्कालीन एसडीएम अशोक शर्मा (वर्तमान में एडीएम जयपुर) की मौजूदगी में नगरपालिका प्रशासन की शिकायत पर उक्त भूमि से कुछ कथित खातेदारों के कब्जे हटाकर इसे पूरी तरह से अतिक्रमण से मुक्त करवाया गया था और अल्प समय में ही मिनी स्टेडियम के लिए आरक्षित भूमि पर जयपुर की तर्ज पर सैण्ट्रल पार्क व स्टेडियम निर्माण किए जाने के लिए एक शानदार प्रोग्राम का आयोजन कर विधायक निर्मल कुमावत के द्वारा इस भूमि पर सम्राट पृथ्वीराज चौहान सैण्ट्रल पार्क स्टेडियम का निर्माण करवाए जाने हेतु 17 अक्टूबर 2017 को इसका शिलान्यास भी किया गया था। उस वक्त समारोह में मौजूद लोगों को सुनहरे सपने दिखा दिए गए। कुछ भाजपा नेताओं ने अपनी इस उपलब्धि को लेकर वाहीवाही भी लूटी। लेकिन आज तक यह यह समझ से परे है कि जब प्रदेश सरकार ने इस सम्पूर्ण भूमि को मिनी स्टेडियम के लिए रिजर्व कर रखा है तो फिर इस भूमि पर सम्राट पृथ्वीराज चौहान सैण्ट्रल पार्क स्टेडियम के दोहरे नाम का शिलान्यास पट्ट क्यों लगाया गया।

शिलान्यास के बाद से इस भूमि की किसी ने सुध नहीं ली। वर्तमान में इस लम्बी चौड़ी भूमि पर जंगली घास फूंस व पेड़ पौधों ने साम्राज्य स्थापित कर लिया है। अतिक्रमण से मुक्त करवाने के बावजूद इस भूमि की सुरक्षा के लिए अभी तक सरकारी स्तर पर कोई तारबंदी तक नहीं करवाई गई है। अभी तक इस बारे में कोई स्पष्ट जवाब देने को तैयार नहीं है कि इस भूमि पर स्टेडियम कब निर्माण शुरू होगा, इसके निर्माण के लिए खेल मंत्रालय की ओर से कब तक फण्ड उपलब्ध करवाया जाएगा। नगरपालिका की खुद की माली हालत ऐसी है कि यह काम उनके स्तर से संभव नहीं है, जब फण्ड ही नहीं है तो फिर इसका शिलान्यास किस आधार पर और जल्दबाजी में क्यों किया गया यह भी शोचनीय प्रश्न है।

भैरुलाल बैरवा ने 10 वर्ष तक श्रमदान कर मोक्षधाम की तस्वीर बदली

बोराज, (निसं)। उगरियावास निवासी 87 वर्षीय भैरुराम ने अपनी पत्नी की याद में वीरान पड़ी शमशान भूमी को स्वर्ग बनाने की ठानी और ढाई सौ से ज्यादा छायादार पेड़ों का अंबार खड़ा कर दिया।

बोराज पटवारी सहायक घासीलाल कुमावत ने बताया कि भेरुलाल बैरवा ने पिछले 10 वर्षों से नियमित श्रमदान कर मोक्षधाम परिसर की तस्वीर ही बदल दी। बंजर भूमि को अपने सीमित कोष से भूमि को लेवल करवाना, पेड़ पौधे लगाना व पेड़ों को पानी पिलाना साथ ही परिसर में साफ सफाई रखना यह सब भैरू बाबा की दिनचर्या में शामिल हो गए और वीरान पड़ी शमशान भूमि को गुलजार कर दिया।

समय-समय पर उगरियावास ग्राम पंचायत प्रसाशन की ओर से विकास कार्यों के दौरान मोक्ष धाम परिसर की बाउंड्री वाल बनवाना, पक्का चबूतरा, टीनशेड वह मोक्षस्थल का पक्का निर्माण करवा कर वीरान शमशान को संवारने में सहयोग किया है। बुजुर्ग भेरु बाबा बताते हैं 10 वर्ष पूर्व पत्नी के अंतिम समय पर मोक्षधाम में एक बड़ व पीपल का पेड़ लगाने का वादा किया था तभी से ऐसी लगन लगी कि वीरान पड़ी शमशान भूमि को स्वर्ग बनाने की ठानी वह पेड़ लगाना व उनकी संभाल करना , यही जिंदगी का लक्ष्य मानकर मैं यहां सेवा में जुटा रहता हूं ।

- बंजर भूमि को अपने सीमित कोष से भूमि को लेवल करवाना, पौधे लगाना व पानी पिलाना आदि कार्य किये

भैरू बाबा का कहना है परिसर में पानी का कनेक्शन है लेकिन पानी नहीं आता सो पेड़ों को पानी पिलाने के लिए यहां बने होद में निजी टैंकर से पानी डलवाना पड़ता है।

बोराज के मोक्षधाम परिसर उगरियावास मेंभैरू बाबा पेड़ों की सार संभाल करते है।

श्रीमहावीर जी में 94 एमएम बारिश हुई, पांचना बांध के दो गेट खोलकर पानी निकाला

करौली, (निसं)। करौली जिला मुख्यालय सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में मानसून एक बार फिर से मेहरबान हो गया है और झमाझम बारिश के चलते नदी, नालों में पानी की आवक बढ़ गई है। बीते कई दिनों से पड़ रही भीषण गर्मी और उमस के कारण लोगों का हाल बेहाल हो रहा था। मंगलवार रात्रि को अचानक मौसम ने पलटा खाया और झमाझम बारिश का दौर शुरू हुआ बीते 24 घंटे में करौली जिले में 62 एमएम बारिश दर्ज की गई है सर्वाधिक 94 एमएम बारिश श्रीमहावीर जी और सबसे कम कालीसिल बांध पर 18 एमएम बारिश दर्ज की गई।

करौली के पांचना बांध से दो गेट खोलकर पानी की निकासी की जा रही है।

- झमाझम बारिश के चलते नदी, नालों में पानी की आवक बढ़ गई है

मंगलवार रात्रि से शुरू हुआ बरसात का दौर बुधवार को प्रात: तक जारी रहा। रातभर चले बारिश के दौर के चलते जिले के सभी नदी, नाले बांध और तालाबों में पानी की आवक तेज हो गई है। जिला मुख्यालय पर मंगलवार को दिनभर बादल छाए रहे और मौसम सुहावना बना रहा। जल संसाधन विभाग के अधिशासी अभियंता सुशील कुमार ने बताया कि बीते 24 घंटे में जिले में कुल 62 एमएम बारिश दर्ज की गई है करौली में 86 एमएम, हिण्डौन में 75, सपोटरा में 22,टोडाभीम में 66, नादौती में 30,मंडरायल में 79 एवं श्रीमहावीर जी में 94 एमएम, पॉचना बाध पर 70 एमएम, कालीसिल बांध पर 18 तथा जगर बांध पर 80 एमएम बारिश दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि सपोटरा के कालीसिल बांध पर 8 इंच की चादर चल रही है जबकि मामचारी बांध पर 4 इंच की चादर चल रही है। करौली जिले के सबसे बड़े पंचना बांध में लगातार हो रही पानी की आवक के चलते दो गेट खोलकर गंभीर नदी में 2400 क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है। पांचना बांध का अधिकतम जलस्तर 258.62 मीटर के मुकाबले 258.35 मी पहुंच गया जिसके चलते बांध के गेट नंबर 2 और 4 को खोलकर 2400 क्यूसेक पानी की निकासी की जा रही है।

राशिफल गुरूवार 24 अगस्त, 2023

पंडित अनिल शर्मा

द्वि. सावन मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, विशाखा नक्षत्र प्रात: 9:04 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 8:36 तक, विष्टि करण दिन 3:22 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा। आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 9:24 से आरम्भ होगा। आज भद्रा दिन 3:22 तक है। आज दुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत है। आज मेला नयना देवी और चिन्तन पूर्णा है।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:42 तक, चर 10:53 से 12:29 तक, लाभ-अमृत 12:29 से 3:41 तक, शुभ 5:17 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:06, सूर्यास्त 6:52

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

धनु
घर-परिवार के लिए अनावश्यक धन खर्च होगा। धन हानि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक संपर्कों का विस्तार हो सकता है।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।